आखर हिंदी पत्रिका ; e-ISSN-2583-0597 खंड 4/अंक 2/जून 2024
Received: 14/06/2024; Accepted: 15/06/2024; Published: 26/06/2024

असग़र वजाहत कृत "कैसी आगी लगाई" उपन्यास में व्यंग्य का स्वरूप

- **नाज़िया परवीन,**
शोधार्थी,
हिन्दी विभाग,
अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय,
अलीगढ़ (202001)

नाज़िया परवीन, **असग़र वजाहत कृत "कैसी आगी लगाई" उपन्यास में व्यंग्य का स्वरूप**, आखर हिंदी पत्रिका, खंड 4/अंक 2/जून 2024,(125-129)

असग़र वजाहत ने 'कैसी लगी लगाई' उपन्यास में समकालीन भारतीय राजनीति मे सांप्रदायिकता, अपराध और पूंजीवाद आदि आयामों को प्रस्तुत किया गया है। उपन्यास के आरंभ में सांप्रदायिकता के दंगे को चित्रित किया गया है । जिसके माध्यम से लेखक ने यह प्रस्तुत करने का प्रयास किया है कि सांप्रदायिकता हिंदू मुसलमान द्वारा नहीं रची गई बल्कि राजनीति के उद्देश्य से रची गई है । अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय को केंद्र में रखकर उच्च शिक्षण संस्थानों की नीतियों एवं उनमें होने वाले अवसरवाद, राजनीति आदि को व्यंग्य के माध्यम से प्रस्तुत किया है। कथावाचक साजिद का अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय में कम्युनिस्ट राजनीति की और आकृष्ट होता है और सोचता है कि देश में बदलाव इस विचारधारा के माध्यम से लाया जा सकता है। धीरे - धीरे वह कम्युनिस्ट पार्टी की समझौतावादी प्रवृत्ति, जातिवादी, अवसरवाद आदि से परिचित होता है। अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय जैसे उच्च शिक्षण संस्थानों में धार्मिक कट्टरवादी संगठनों पर भी व्यंग्य किया है । अलीगढ़ मुस्लिम विद्यालय को केंद्र परिप्रेक्ष्य में रखकर भारतीय परिवेश में उच्च शिक्षा की यथार्थता और चुनौतियों को प्रस्तुत करते हैं । इसमें उपन्यासकार ने कला और विचारधारा को एक साथ प्रस्तुत किया । यह उपन्यास वर्तमान की जटिलताओं को व्यंग्य के माध्यम से हमारे सामने प्रस्तुत करता है ।

'कैसी आगी लगाई' में असग़र वजाहत ने समकालीन भारतीय लोकतंत्र के स्वरूप पर व्यंग्य किया है । वर्तमान समय में लोकतंत्र के आयाम पूंजी, अपराध , सांप्रदायिक दंगे आदि नई सदी में ही घटित नहीं हुए हैं उनका आरम्भ पहले ही हो चुका था । वर्तमान में यह स्पष्ट दिखाई पड़ता है । 'कैसी आगी लगाई' उपन्यास में समकालीन राजनीति के आयाम चित्रित हुए हैं । उपन्यास के आरम्भ में ही सांप्रदायिक दंगे का दृश्य प्रस्तुत

किया गया है। लेकिन दंगे में उत्तेजना बहुत कम दिखाई देती है। जो सभी दंगों में मौजूद होती है। यहां दंगा मात्र छोटा सा प्रसंग बनकर रह जाता है। "समकालीन यथार्थ की दृष्टि से यह भले ही सत्य से दूर हो लेकिन लेखक एक बड़े सत्य की ओर यहां संकेत करता है। जो इसकी पूरी कथा में समाविष्ट है। सत्य यह कि भारतीय समाज में सांप्रदायिकता नस्ली नफरत की उपज नहीं है। इसका सिर्फ एक धार्मिक संदर्भ है और चूंकि यहां अनेक धर्मों, संप्रदायों के लोग एक साथ रहते हैं इसलिए हिंदू एवं मुसलमान तक सीमित सांप्रदायिकता स्वाभाविक कम और राजनीतिक परिप्रेक्ष्य में रची गई ज्यादा है।"[1] वर्तमान में दंगों का मनोविज्ञान राजनीतिक स्वार्थ से बना हुआ है। इसमें जातिवाद, धार्मिक सांप्रदायिकता की बहुत कम भूमिका है। ' कैसी आगी लगाई' उपन्यास में दंगा बहुत सहजता के साथ निपट जाता है। उपन्यास में नायक साजिद की चरित्र पर गौर किया जाए तो इसे किसी भी रूप में मुस्लिम समुदाय की कथा से नहीं जोड़ा जा सकता। कथाकार का उद्देश्य मुस्लिम जीवन की कथा को केंद्र बनाने का नहीं है। ' कैसी आगी लगाई' में साजिद का चरित्र विशिष्ट और सामान्य स्थितियों को एक साथ प्रस्तुत कर देता है। उपन्यास में भिन्न - भिन्न प्रकार के चरित्र मौजूद हैं। उपन्यास की कथावस्तु के विकास में उनका ज्यादा महत्व नहीं है। कुछ हास्यास्पद और विद्रूप किस्म के हैं। जैसे शिया थियोलॉजी में पढ़ाने वाले मौलाना को 'मौलाना घोड़ी' कहने वाले छात्र, शोध छात्रा को साड़ी पहनना सिखाने वाले पंडित जी के ब्राह्मण तत्व के पाखंड का विद्रुप, और शकील का बाप जो कामवर्धक इंजेक्शन लगवाता है।

उपन्यास में तीन दोस्त कथावाचक , अहमद और शकील हैं। तीनों अलग-अलग रास्तों पर चलते हैं । और अलग - अलग मार्ग पर अपना करियर बनाते हैं। तीनों दोस्त स्वातंत्र्योत्तर भारत के चरित्र के रूप में प्रस्तुत हैं। अहमद अपनी उच्च पारिवारिक पृष्ठभूमि के बल पर भारत सरकार के विदेश मंत्रालय में ऊंचे पदों पर नौकरी करता है। शकील मुस्लिम वोट बैंक की राजनीति के बल पर राजनीति के शीर्ष तक पहुंचता है। लेकिन अंत में तीनों अपने जीवन मे असफल होते हैं। साजिद का जीवन आधे -अधूरे प्रयोगों का जीवन है। एक तरह से देखें तो उपन्यास में यह जनतंत्र की विभिन्नता को प्रस्तुत करने के लिए किए गए अलग-अलग प्रयोग हैं। साजिद को अलीगढ़ में पढ़ाई के दौरान लगता था कि समाज में बदलाव वामपंथी राजनीति के माध्यम से हो सकता है। वह बदलाव का स्वप्न देखता है। वह अपने समय के प्रगतिशील बुद्धिजीवी का प्रतिनिधित्व करता है। उसके भीतर वह स्वप्न अलीगढ़ में मार्क्सवाद के संपर्क में आने से जन्म लेता है। अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय में कम्युनिस्टों के संपर्क में आने से विश्व को अलग दृष्टिकोण से देखने की क्षमता हासिल करता है। लेकिन कम्युनिस्ट राजनीति का जितनी सूक्ष्मता से सर्वेक्षण करता है। कम्युनिस्ट पार्टी की कमजोरी, पार्टी के भीतर की अवसरवादी प्रवृत्तियां, पार्टी का अभिजात्यवादी और वर्गभेद से भरा हुआ ढांचा आदि उसके सामने प्रस्तुत होता है। पार्टी में एक तरफ कैरियरिज्म है और दूसरी तरफ अवसरवाद। "क्रांति फ्रेम में लगाकर टांगी गई पुरानी तस्वीर बनकर रह गई है।"[2] कम्युनिस्ट नैतिकता के दोहरेपन का प्रतीक बनकर उभरता है रज़ी। साजिद अलीगढ़ में वैचारिक तौर पर सबसे पहले रज़ी के संपर्क में आता है। यह कहना गलत नहीं होगा वह रज़ी से

प्रभावित है। रज़ी मुसलमानों के भाविष्य को कम्युनिस्ट पार्टी के साथ मानता है। वह नास्तिक है लेकिन जमाते इस्लामी से जुड़े प्रोफेसर की मदद से नौकरी प्राप्त करता है। विश्वविद्यालय की कम्युनिस्ट पार्टी के किसी भी सदस्य के अंदर रज़ी के अवसरवाद का विरोध करने का हौसला नहीं है।

कामरेड लाल सिंह रज़ी का विलोम चरित्र है। वह कम्युनिस्ट पार्टी का होल टाइमर है। कथावाचक साजिद लाल सिंह की नैतिक दृढ़ता और उसके संघर्ष से प्रभावित होता है। "क्रांतिकारियों के बारे में किस्से - कहानियां सुनी थीं। फिल्में देखी थीं। किताबें पढ़ी थीं। लेकिन लाल सिंह का पूरा परिचय पाकर लगा था कि मैं जीवित इतिहास के साथ हूं। मतलब भगत सिंह इसी तरह गोश्त-पोश्त के आदमी रहे होंगे, जैसे कामरेड लाल सिंह हैं।"[3] वर्ग संघर्ष की बात करने वाली पार्टी में ही ऐसा वर्ग विभाजन है कि कामरेड लाल सिंह के असली कम्युनिस्ट होने पर भी सवाल उठाए जाते हैं। तर्क करते हैं कि जिसने 'दास कैपिटल' ही नहीं पढ़ी वह कम्युनिस्ट कैसे हो सकता है ? लाल सिंह अंग्रेजी नहीं जानता ,दास कैपिटल का हिंदी अनुवाद हुआ नहीं ,कम्युनिस्ट पार्टी में लाल सिंह की बहुत कम हैसियत है। पार्टी का नेतृत्व बुद्धिजीवियों के पास है जो सत्ता की दुनिया है। प्रोफेसर अनवारूल हक और आतिया खान एक ही सिक्के के दो पहलू हैं-"कुल मिलाकर यही लग रहा था की कितनी सुरक्षित, कितनी आनंददायक, कितनी पुरानी और स्थायी, कितनी शानदार और ग्रैंड है- इन लोगों की दुनिया...यहां वर्षों पहले यही सब रहा होगा। सत्ता के परिवर्तन ने भी यहां कोई असर नहीं डाला होगा। और न भविष्य में ऐसा होगा। तो फिर किस परिवर्तन के कामना की जाए ? क्या यह सच है कि हर क्रांति सबसे पहले अपने आप को खा डालती है ?"[4] 'कैसी आगी लगाई' उपन्यास में असग़र वजाहत ने भारत की कम्युनिस्ट राजनीति की त्रासदी के कारणों पर व्यंग्य किया है।

असग़र वजाहत ने उपन्यास 'कैसी आगी लगाई' में अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय में अध्ययन के दौरान अर्जित किए अनुभवों को प्रस्तुत किया है। अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय को केन्द्र में रखकर अल्पसंख्यक उच्च शिक्षा संस्थान के वर्गभेद से भरे चरित्र को प्रस्तुत किया है। विश्वविद्यालय का नाम नहीं लिया गया है। विश्वविद्यालय की शैक्षणिक दुनिया वामपंथी विचारधारा और राजनीति का केन्द्र रही है। लेकिन प्रगतिशीलता की बड़ी-बड़ी बातों के बावजूद संस्थाओं के ज्यादातर अध्यापकों में मध्यवर्गीय अवसरवाद भरा हुआ है। लेखक ने विश्वविद्यालय जैसे संस्थान में अध्यापकों के अवसरवादी दृष्टिकोण पर व्यंग्य किया है।

असग़र वजाहत ने विश्वविद्यालय में निहित सांप्रदायिकता की समस्या पर व्यंग्य किया है। उपन्यास में कुछ अध्यापकों के चरित्र में निहित सांप्रदायिकता के खतरों को भी चित्रित किया गया है। भारतीय राष्ट्र के लिए स्थाई समस्या बन चुकी सांप्रदायिकता से लेकर लोकतंत्र के चुनावी कर्मकांड तक विविध मुद्दों को उपन्यास में चिन्हित किया गया है। उपन्यास के कथानक के केंद्र में है एक अल्पसंख्यक विश्वविद्यालय का शैक्षणिक परिसर। अतः उपन्यास में विश्वविद्यालय को सामने रखकर लेखक असग़र वजाहत ने शिक्षा विषयक मान्यताओं को विश्लेषित करने का प्रयास किया है। उपन्यास की कथा के केंद्र में विश्वविद्यालय के अवसरवादी और भ्रष्ट लोग हैं। व्यक्तिगत स्वार्थों के लिए विभिन्न विचारधाराओं को अपनाने वाले प्रोफेसर लोग जरूरत पड़ने पर किसी भी विचारधारा के व्यक्ति से जुड़ जाते हैं। वही जमाते इस्लामी वाले लोग भी हैं जो हिंदुस्तान

में इस्लामी हुकूमत का सपना देखते हैं । हिंदी विभागाध्यक्ष पंडित जी जैसे प्रोफेसर पढ़े-लिखे होने पर भी जातिवाद की विचारधारा से मुक्त नहीं हो पाते । विश्वविद्यालय में इरफान साहब जैसे काबिल लोग भी हैं । आदर्शवाद की बात करने वाले पहले अध्यापक करियर के तमाम नियमों को त्यागकर अनैतिकता की ओर चले जाते हैं। जैसे ही विश्वविद्यालय के छात्रावासों में रहने वाले छात्र लाइट चले जाने बेहूदगी के आगोश में चले जाते हैं, परन्तु लाइट आते ही फिर सभ्यता का चोला पहन लेते हैं । विश्वविद्यालय में धर्म के आधार पर छात्राओं के विषय तय होते हैं। दृष्टव्य है कि " बीए या बीएससी वाले पहले साल के लड़कों के लिए शिया या सुन्नी थियोलॉजी का एक पेपर कंपलसरी था हिंदू लड़कों को 'इंडियन कल्चर एंड सिविलाइजेशन' का पेपर लेना पड़ता था ।"[5] अलग-अलग धर्मों के वास्तविक स्वरूप को प्रस्तुत करने वाले ऐसे पेपर एक तरह से तो गांधीवादी विचारधारा को प्रस्तुत करते हैं । यदि पढ़कर छात्र अच्छा आदमी बन सकता है तो सांप्रदायिकता की समास्या पर लगाम लगाई जा सकती है । धार्मिक संगठनों और संस्थानों पर धर्म की उल्टी सीधी व्याख्या की जिम्मेदारी छोड़कर विश्वविद्यालय यह दायित्व अपने हाथों में ले लेता है तो यह निश्चय ही बेहतर है । लेकिन विश्वविद्यालय में विद्यर्थियों के लिए अपने धार्मिक संप्रदाय विशेष के अनुसार ही धार्मिक शिक्षा अर्जित करने की बाध्यता होना स्वस्थ लोकतांत्रिक समाज की दृष्टि से अनुचित है । इस प्रकार की मान्यताओं से छात्रों की संकीर्ण मानसिकता बन जाती है। अगर छात्र को दूसरे संप्रदाय की धार्मिक मान्यताओं और सिद्धांतों से वंचित रखेंगे तो इससे पारस्परिक विद्वेष और ज्यादा पनपेगा । हिन्दू छात्रों को पढ़ाए जाने वाले विषय का नाम 'इंडियन कल्चर एंड सिविलाइजेशन' रखा गया है क्या भारतीय समाज में सिर्फ हिन्दू छात्र ही हैं जिन्हें संस्कृति, सभ्यता का विषय पढ़ना है । धार्मिक संप्रदाय के आधार पर विश्वविद्यालय में विषय का इस प्रकार विभाजन धार्मिक सांप्रदायिकता का कारण बन सकता है । उपन्यास के आरम्भ में ही सांप्रदायिक दृश्य को चित्रित किया गया है । शहर में हुए दंगों में हिंदुओं को सबक सिखाने के लिए विश्वविद्यालय के छात्र भी शमशाद मार्केट में हिंदुओं की दुकान लूट लेते हैं । लेकिन विश्वविद्यालय का माहौल मानवीय संवेदना से युक्त है अत: लूटे गए सामान को वापस करने की अपील पर बहुत सारे छात्र लूटे सामान को छात्रावास अधीक्षक को लौटा भी देते हैं । उपन्यास में भारत विभाजन और धर्म आधारित द्विराष्ट्रवाद के सिद्धांत को यथार्थ स्वरूप देने में अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के छात्रों की भूमिका को भी रेखांकित किया है । "पाकिस्तान बनाने में रज़ी के मुताबिक दिमाग था मुहम्मद अली जिन्ना का पैसा लगा था महाराज महमूदाबाद का और काम किया था अलीगढ़ के उन छात्रों ने । यहां से उस जमाने में स्टूडेंट्स के ग्रुप पेशावर और बलोचिस्तान मुस्लिम लीग का प्रचार करने जाया करते थे ।"[6] अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय में आजादी के पश्चात् भी जमाते इस्लामी जैसे कट्टरपंथी धार्मिक विचारधारा के लोग हैं वही दूसरी ओर सीपीआई और सीपीएम के समर्थक भी हैं । जमाते इस्लामी के लोगों को भारतीय लोकतंत्र में वैसे ही विश्वास नहीं है जैसे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को नहीं है।

विश्वविद्यालय में शिया और सुन्नी एवं हिन्दू छात्रों के विषय उनके धर्म के आधार पर चयनित किये जाते हैं। असग़र वजाहत ने विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के वातावरण पर व्यंग्य किया है हिंदी विभाग में आधिकांश विद्यार्थी और अध्यापक हिन्दू सम्प्रदाय के हैं । एक-दो ही मुस्लिम छात्र हैं । साजिद, करीम और एक लड़की

शमीम बानो । साजिद ने साहित्यिक अभिरुचि के कारण और शोधार्थी केपी सिंह की सलाह से हिंदी के स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम में प्रवेश लिया था। लेकिन करीम ने एम.ए. हिंदी पाठ्यक्रम में दाखिला इसलिए लिया अपने मैनेजर चाचा की इस्लामिया इंटर कॉलेज में हिंदी अध्यापक की नौकरी पाने के लिए । क्योंकि इस्लामिया इंटर कॉलेज में हिंदी पढ़ाने के लिए कोई मुसलमान अध्यापक नहीं मिल रहा था । करीम को अपने लिए नौकरी का अवसर नजर आता है । हिंदी में मुस्लिम अध्यापकों की कमी भाषाई पाठ्यक्रमों के धार्मिक विभाजन का कारण है । उपन्यासकार ने मुस्लिम पृष्ठभूमि के अध्यापकों और छात्रों ने हिंदी के विरोध के कारण बताएं हैं । दृष्टव्य है, "एक तो हिन्दी को हिन्दुओं की जुबान माना जाता है । एक ऐसी जुबान जो पिछड़ी हुई है । जहीलों, अनपढ़ों और देहातियों की जुबान है और भावना के पीछे सांप्रदायिक मानसिकता भी काम करती है।[7] असग़र वजाहत ने 'कैसी आगी लगाई' उपन्यास में भाषा के वर्गीय चरित्र पर व्यंग्य करने के साथ-साथ अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय को केन्द्र में रखकर उच्च शिक्षा संस्थानों में अभिजात्य वर्चस्व को चित्रित किया है ।

अतः उपरोक्त विवेचन के आलोक में हम कह सकते हैं कि असग़र वजाहत ने 'कैसी आगी लगाई' उपन्यास में समाज में फैली विद्रूपताओं, धार्मिक कट्टरता, भ्रष्टाचार आदि समस्याओं पर करारा व्यंग्य किया है ।

सन्दर्भ सूची:

1- डा. पल्लव,(संपा.), बनास जन, राजपाल एंड सन्ज दिल्ली, अंक- 21, पृष्ठ - 118

2- वजाहत, असग़र, कैसी आगी लगाई, राजकमल प्रकाशन प्रा. लि. दिल्ली, संस्करण 2004, पृष्ठ- 346

3- वही, पृष्ठ - 181

4- वही, पृष्ठ - 281

5- वही, पृष्ठ - 18

6- वही, पृष्ठ - 122

7- वही, पृष्ठ - 166

****